Page I

BA I, Psy (H)

Paper I, Gen. Psychology

Topic - Measurement of Human Motive

मानव अभिप्रेरकों विशेषतः सामाजिक अभिप्रेरकों को मापने का प्रयास किया गया है क्योंकि जैविक अभिप्रेरक को मापने के लिए कोई प्रविधि की जरूरत नहीं पड़ती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सामाजिक अभिप्रेरक का स्वरूप भी जटिल होता है। इसलिए मनोविज्ञान में मनोवैज्ञानिकों ने इसके मापन हेतु विशेष प्रविधि का वर्णन किया है जो निम्नलिखित है।

(1.) प्रक्षेपण विधि (Projective technique)

इस विधि द्वारा किसी व्यक्ति को असंगठित एवं अस्पष्ट सामग्रियाँ दी जाती है और उस व्यक्ति को उसके आधार पर वर्णन करना पड़ता है। इस विधि को प्रक्षेपण विधि कहा जाता है क्योंकि व्यक्ति अपनी इच्छा, अभिप्रेरक, अभिप्रेरकों का संघर्ष आदि का प्रक्षेपण अस्पष्ट एवं असंगठित सामग्रियों का वर्णन परोक्ष रूप से करता है। इस विधि के TAT (Thematic Appreciation Test) सबसे प्रमुख है। जिसके द्वारा सामाजिक अभिप्रेरकों की माप की जाती है। इस विधि में कुछ मानक कार्ड होते हैं जिस पर कुछ अस्पष्ट चित्र बने होते हैं। इन चित्रों के आधार पर व्यक्ति को एक कहानी लिखनी होती है जिनका विश्लेषण करने के बाद उस व्यक्ति के अभिप्रेरकों के बारे में पता चलता है।

इस परीक्षण का प्रतिपादन मरे (Murray, 1938) ने किया था और इस परीक्षण द्वारा उपलब्धि आवश्यकता (achievement motivation need) सम्बन्धन आवश्यकता (affiliation need) प्रभुत्व आवश्यकता (dominance need), स्वतंत्रता आवश्यकता (autonomy need), अनादर आवश्यकता (abasement need) आदि का मापन आसानी से किया जाता है। इस विधि का दोष यह है इसमें प्राप्तांक लेखन (scoring) बहुत विश्वसनीय नहीं होता है इसमें वस्तुनिष्ठता की भी कमी होती है क्योंकि एक कहानी का विश्लेषण अलग-अलग विशेषज्ञ अलग-अलग ढंग से करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप सामाजिक अभिप्रेरकों का मापन सही ढंग से नहीं हो पाता है।

(2.) प्रश्नावली विधि (Questionnaire method)
इस विधि को आविष्कारिका (Inventory) विधि भी कहा जाता है जिसमें बहुत सारे प्रश्न होते हैं जो व्यक्ति के भिन्न-भिन्न सामाजिक अभिप्रेरकों से संबंधित होते हैं। व्यक्ति इन प्रश्नों को पढ़कर हाँ या ना, सही या गलत में उत्तर देते हैं। एडवर्ड्स (Edwards) ने 15 भिन्न-भिन्न प्रकार के सामाजिक अभिप्रेरकों का मापन इस परीक्षण द्वारा किया है इसके द्वारा उपलब्धि आवश्यकता, सम्बन्धन आवश्यकता, अनादर आवश्यकता, प्रदर्शन आवश्यकता आदि की माप की जाती है।
इस विधि का सबसे प्रमुख दोष यह है कि इसमें व्यक्ति वास्तविक उत्तर को छिपा लेता है।

Page 3

जिनमें प्रश्नावली विधि की निर्भरता का अभाव
इस दोष को हटाने हेतु एडवर्डस ने उपयुक्त
सिद्धांत के प्रश्न का उत्तर बाध्यकरण (forced choice) के रूप में तैयार किया है एक प्रश्न के तीन समान उत्तर या तीन असमान उत्तर दिये जाते हैं जिनमें से एक सही उत्तर व्यक्ति को चुनना होता है जिससे उपर्युक्त दोष को दूर किया जा सकता है।

(3) परिस्थितिजन्य परीक्षण (Situational test)

सामाजिक अभिप्रेरकों को मापने हेतु परिस्थितिजन्य परीक्षण है। इस परीक्षण में एक खास प्रकार के परिस्थिति उत्पन्न किया जाता है और ~~व्यक्ति को~~ जिसमें व्यक्ति को कुछ करना होता है और उसकी क्रियाओं के आधार पर व्यक्ति के सामाजिक अभिप्रेरक का मापन किया जाता है यदि किसी व्यक्ति का सम्बन्धन आवश्यकता का मापन करना है तो उसके सामने एक विशेष प्रकार की परिस्थिति चाहे तो वह अपने मित्र का इंतजार एक ऐसे कमरे में बैठकर कर सकता है जहाँ वह अकेला होगा या फिर एक ऐसे कमरे में बैठकर कर सकता है जहाँ पहले से 20 आदमी बैठे हैं उत्पन्न कर देंगे। यदि व्यक्ति में सम्बन्धन आवश्यकता अधिक मजबूत होगी तो व्यक्ति 20 व्यक्ति वाले में बैठकर इंतजार करना पसंद करेगा। इसी प्रकार किसी व्यक्ति की आक्रमणशीलता का मापन करना है तो उसे एक विशेष परिस्थिति जैसे उस व्यक्ति को कुछ ऐसे लोगों के बीच लाकर जो उस व्यक्ति को अपमानित करें में रखकर किया जा सकता है यदि व्यक्ति अपने अपमान का बदला दूसरे लोगों के प्रति आक्रमणशील

दिखलाया जाता है तो इसका स्पष्ट मतलब यह हुआ कि समाज में यह अभिप्रेरक तीव्र है।

प्रक्षेपण परीक्षण के दौरान यदि किसी व्यक्ति को यह पता चलता है कि उसके व्यवहार का निरीक्षण किया जा रहा है तो वैसी परिस्थिति में व्यक्ति अपने वास्तविक एवं स्वाभाविक व्यवहार में परिवर्तन ला देता है।

(5) ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण (Analysis of historical events) - सामाजिक अभिप्रेरकों का माप ऐतिहासिक घटनाओं का विश्लेषण करके भी किया जाता है। किसी समाज के अधिकतर व्यक्तियों की आवश्यकता एवं समाज के समाचार पत्रों एवं संस्थाओं द्वारा आसानी से अभिव्यक्त किया जाता है। यदि इन खबरों का विश्लेषण किया जाए तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँच सकेंगे कि अधिकतर लोगों का सामाजिक अभिप्रेरक क्या है। यदि भारतीय समाचार पत्रों में 70 वर्ष पहले छपी खबरों एवं उनके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करें तो पायेंगे उस समय स्त्री शिक्षा की आवश्यकता नहीं के बराबर था। परन्तु आजकल परिस्थिति ठीक विपरीत है। 10 वर्षों की सामाजिक घटनाओं एवं समाचार पत्रों के खबरों का विश्लेषण करें तो हम पायेंगे की स्त्री शिक्षा की आवश्यकता काफी महसूस हो रही है।

Kumar Paty
Mahamaya College, Ara